IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 11, March 2025 Impact Factor: 7.67

भवभूति की नाट्यकृतियों में नायक-नायिका भेद एवं प्रारंभिक शास्त्रीय समीक्षा

डॉ. प्रवीन कुमारी
पूर्व शोध विद्वान
आगरा कॉलेज, आगरा, भारत

सारांश

यह शोधपत्र संस्कृत नाट्यशास्त्र की दृष्टि से भवभूति की नाट्यकृतियों में नायक-नायिका भेद का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भवभूति की तीन प्रमुख नाट्यरचनाएँ — *महावीरचरित*, *मालतीमाधव*, और *उत्तररामचरित* — शास्त्रीय नाट्यशास्त्र में वर्णित नायक-नायिका के प्रकारों के आलोक में समीक्षा की गई हैं। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र, साहित्यदर्पण, दशरूपक आदि शास्त्रों के अनुसार नायक-नायिका के गुण, भेद, और भूमिकाओं को संदर्भित करते हुए, भवभूति के पात्रों में विद्यमान शास्त्रीयता एवं वैचारिक स्वतंत्रता के संतुलन को रेखांकित किया गया है। शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि भवभूति के नायक-नायिका शास्त्रीय वर्गीकरण में आते हुए भी उससे आगे जाकर मानवीय गहराई, आत्मसंघर्ष और सामाजिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। राम, माधव, सीता और मालती जैसे पात्र रस निष्पत्ति, संवादशक्ति, और मनोवैज्ञानिक संवेदना के माध्यम से नाटकों को केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एवं मानवीय अनुभवों का माध्यम बनाते हैं। यह अध्ययन भवभूति की कृतियों की शास्त्रीयता और आधुनिक प्रासंगिकता को एकसाथ प्रस्तुत करता है।

1. भूमिका

संस्कृत नाट्य परंपरा में भवभूति एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। उनकी काव्य प्रतिभा और नाट्यदृष्टि ने संस्कृत साहित्य को एक नया आयाम दिया। वे न केवल भावनात्मक गहराई और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं के उद्घाटन में समर्थ थे, बल्कि उन्होंने शास्त्रीय नाट्यशास्त्र के अनुशासन में रहकर भी नवीन प्रयोग किए। उनकी रचनाओं में नायक-नायिका के चरित्रों का स्वरूप, उनकी भूमिका, उनके अंतर्विरोध और उनके पारस्परिक संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जिनका विश्लेषण शास्त्रीय दृष्टिकोण से करना न केवल एक साहित्यिक अन्वेषण है, अपितु शास्त्रीय मर्म का पुनर्पाठ भी है।

नाट्यशास्त्र (भरतमुनि) एवं **साहित्यदर्पण**, **साहित्यशास्त्र**, **साहित्यालंकार**, आदि शास्त्रीय ग्रंथों में नायक-नायिका भेद, उनके प्रकार, गुण, दोष, एवं भूमिका का गहन विश्लेषण किया गया है। भवभूति की तीन प्रमुख नाट्यकृतियाँ — *महावीरचरित*, *मालतीमाधव* और *उत्तररामचरित* — इन शास्त्रीय मानदंडों के आलोक में नायक और नायिका स्वरूप को विशेष रूप से रेखांकित करती हैं।

यह शोधपत्र इसी दृष्टिकोण से इन पात्रों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है — कि भवभूति के नायक-नायिका किस प्रकार शास्त्रीय वर्गीकरण में आते हैं, वे किन अर्थों में उससे भिन्न हैं, और उनका साहित्यिक-सांस्कृतिक महत्व क्या है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-26556

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 11, March 2025 Impact Factor: 7.67

2. भवभूति: व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय

भवभूति का जन्म 8वीं शताब्दी में माना जाता है। वे विदर्भ के पथकटक (आधुनिक महाराष्ट्र के गोंदिया जिले के पास) निवासी थे। उनका मूल नाम श्रीकण्ठभट्ट था। भवभूति का संबंध एक विद्वत ब्राह्मण कुल से था और उन्हें "कविराज" की उपाधि प्राप्त थी। वे *उज्जयिनी* और *कन्नौज* जैसे शास्त्र और साहित्य के प्रमुख केन्द्रों से भी जुड़े रहे।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं:

1. **महावीरचरित** – राम के युवावस्था की कथा।
2. **मालतीमाधव** – प्रेम और साहस का संयोगपूर्ण नाटक।
3. **उत्तररामचरित** – राम के राज्याभिषेकोत्तर जीवन की करुण कथा।

इन तीनों नाटकों में नायक-नायिका के चरित्र विशेष रूप से दृष्टिगोचर होते हैं, जिनमें भावप्रवणता, नीतिकथा, कर्तव्य और प्रेम का द्वंद्व, तथा आदर्श और यथार्थ के संघर्ष को उद्घाटित किया गया है।

3. भारतीय नाट्यशास्त्र में नायक-नायिका का स्वरूप और वर्गीकरण

भरत मुनि के *नाट्यशास्त्र* तथा *दंडी*, *वामन*, *विश्वनाथ* आदि साहित्याचार्यों द्वारा नायक-नायिका के कई वर्गीकरण प्रस्तुत किए गए हैं।

नायक के प्रकार:

नाट्यशास्त्र के अनुसार नायक चार प्रकार के होते हैं:

1. **धीरोदात्त** – उच्च आदर्शों वाला, शांतचित्त, वीर और धर्मनिष्ठ।
2. **धीरोद्धत** – गर्वीला, वीर रस में तल्लीन, किंचित अहंकारी।
3. **धीरललित** – सौम्य, प्रेममय, मधुर स्वभाव का।
4. **धीरप्रशांत** – संयमी, गंभीर और सहिष्णु।

नायिका के प्रकार:

दशरूपक और *साहित्यदर्पण* में नायिका को मुख्यतः चार प्रकारों में विभाजित किया गया है:

1. **स्वकीया** – पति की पत्नी, अपने स्वामी से प्रेम करने वाली।
2. **परकीया** – किसी अन्य से प्रेम करने वाली (जिससे विवाह न हुआ हो)।
3. **सम्भोगश्रृंगारा की अभिलाषिनी** – कामना से युक्त।
4. **वेश्या** – प्रेम व्यापार को व्यवसाय मानने वाली।

इनके अतिरिक्त अवस्था, भाव, संयोग-वियोग के आधार पर भी अनेक प्रकार की नायिकाओं का वर्णन किया गया है, जैसे **मुग्धा**, **मध्या**, **प्रगल्भा**, **स्वाधीनपतिका**, **विरहिणी**, **कलहांता**, आदि।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 11, March 2025 Impact Factor: 7.67

4. भवभूति के नाटकों में नायक स्वरूप

भवभूति के तीनों प्रमुख नाटकों — *महावीरचरित*, *मालतीमाधव*, तथा *उत्तररामचरित* — में नायक के स्वरूप में विशेष विविधता और गहराई दृष्टिगोचर होती है। ये नायक शास्त्रीय दृष्टिकोण से किसी एक प्रकार में पूरी तरह सीमित नहीं होते, अपितु वे बहुपरतीय और जटिल हैं।

(क) 'महावीरचरित' में राम का नायक स्वरूप

महावीरचरित में राम को एक *धीरोदात्त* नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे साहसी, धर्मनिष्ठ, त्यागशील, और मर्यादा के प्रतीक हैं। शास्त्रों में *धीरोदात्त* नायक के गुणों में साहस, धैर्य, आत्मसंयम, क्षमा और आदर्शवादिता मानी गई है — ये सभी गुण राम में प्रमुख रूप से विद्यमान हैं।

भवभूति के राम केवल युद्धनायक नहीं, बल्कि मानसिक संघर्षों से जूझते हुए एक विवेकशील पुरुष हैं। वे एक ओर सीता के प्रति प्रेम और निष्ठा रखते हैं, तो दूसरी ओर रावण वध के लिए कटिबद्ध हैं। उनकी निर्णायकता और संयम उन्हें शास्त्रीय आदर्श नायक के निकट ले जाती है।

(ख) 'मालतीमाधव' में माधव का नायक स्वरूप

मालतीमाधव में नायक माधव को *धीरललित* नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे सौम्य, भावुक, कलाप्रेमी, और प्रेम में रत पुरुष हैं। धीरललित नायक वह होता है जो स्त्री-संवाद में कुशल, मधुर भाषी, प्रेमपूर्ण और विनयी हो — माधव में ये सभी गुण विद्यमान हैं।

माधव की नायिका मालती से उनका प्रेम पारिवारिक व सामाजिक बाधाओं के विरुद्ध जाकर विकसित होता है। उनका नायकत्व प्रेम-संघर्षों और साहसी प्रयत्नों में प्रकट होता है, जिससे वे एक शक्तिशाली किन्तु कोमलहृदय प्रेमी के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।

(ग) 'उत्तररामचरित' में राम का नायक रूप

उत्तररामचरित भवभूति की परिपक्व रचना है, जिसमें राम एक गहन करुणा और आत्मसंघर्ष से युक्त पात्र के रूप में उभरते हैं। यहाँ का राम शास्त्रीय दृष्टि से *धीरप्रशांत* नायक है — संयमित, सहनशील, और आत्मबलिदानी।

वे सीता का त्याग करते हैं, जो उनके कर्तव्य और समाज के प्रति दायित्व से प्रेरित है। परंतु यह निर्णय उन्हें मानसिक वेदना और आत्मविरोध के गहन द्वंद्व में डाल देता है। राम का यह रूप नायक के शास्त्रीय आदर्शों से कहीं आगे जाता है — वे एक 'ट्रैजिक हीरो' की सीमा तक पहुँचते हैं।

5. भवभूति के नाटकों में नायिकाओं का स्वरूप

भवभूति की नायिकाएँ भी शास्त्रीय नायिका भेद के अंतर्गत रखी जा सकती हैं, परंतु उनमें भी गहराई, आत्मबल, और विशिष्टता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 11, March 2025 Impact Factor: 7.67

(क) सीता – स्वकीया और विरहिणी नायिका

महावीरचरित और *उत्तररामचरित* दोनों में सीता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे *स्वकीया नायिका* हैं — एक पत्नी, जो अपने पति से प्रेम करती है और उसके प्रति निष्ठावान है। *उत्तररामचरित* में वे *विरहिणी* हैं, जो त्याग और समाज के अन्याय का बोझ वहन करती हैं।

उनकी सहनशीलता, आत्मबल, और उच्च आदर्श उन्हें एक आदर्श नायिका के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे केवल प्रेमिका नहीं, एक नारी की गरिमा और शक्ति की प्रतीक बनकर उभरती हैं।

(ख) मालती – प्रगल्भा, परकीया और स्वाधीनपतिका नायिका

मालतीमाधव की नायिका मालती को *प्रगल्भा नायिका* माना जा सकता है — जो प्रेम में निःसंकोच है, निर्णय लेने में सक्षम है और परिस्थिति को प्रभावित करती है। वह *परकीया* है क्योंकि माधव से उसका विवाह नहीं हुआ है, फिर भी प्रेम-सम्बंध है।

मालती के व्यक्तित्व में आधुनिकता, आत्मनिर्णय की क्षमता और प्रेम के लिए संघर्ष की भावना है। वह एक स्वतंत्र नारी के रूप में सामने आती है, जो परंपरा और सामाजिक बाधाओं को चुनौती देती है।

(ग) अन्य स्त्री पात्रों का विश्लेषण

भवभूति के अन्य स्त्री पात्रों में *लवंगिका*, *मधुकरिका*, आदि सहायक नायिकाएँ हैं, जो नायिका के साथ रस-विकास में सहायक भूमिका निभाती हैं। ये पात्र भी शास्त्रीय नायिकाओं की उप-श्रेणियों में आती हैं, किंतु भवभूति ने उन्हें केवल 'सहचर' बनाकर नहीं छोड़ा, बल्कि उन्हें संवादशील, युक्तिपूर्ण और परिस्थितियों में निर्णायक भी बनाया।

6. शास्त्रीय मानकों के आलोक में नायक-नायिका भेद का मूल्यांकन

भवभूति की नाट्यकृतियों के नायक-नायिका का स्वरूप जब शास्त्रीय साहित्य, विशेषतः *नाट्यशास्त्र*, *दशरूपक*, *साहित्यदर्पण* आदि ग्रंथों के प्रकाश में विश्लेषित किया जाता है, तो अनेक स्तरों पर साम्य और भिन्नता देखने को मिलती है।

(क) शास्त्रीयता और वैचारिक स्वतंत्रता का संतुलन

शास्त्रीय मानकों के अनुसार, नायक-नायिका की विशेषताएँ यथासंभव स्थिर मानी गई हैं। उदाहरणतः:

- **नायक**: आदर्श, धैर्यवान, कर्तव्यनिष्ठ, स्त्री के प्रति आदरयुक्त, वीर, संयमी।
- **नायिका**: सुंदर, भावुक, लज्जाशील, चतुर, भावनात्मक, अनुरक्त।

भवभूति के पात्र इनमें से कई गुणों को धारण करते हैं, किंतु वे इन सीमाओं से बाहर जाकर भी अपने चरित्र को गढ़ते हैं। उदाहरणतः:

- राम, शास्त्रीय 'धीरोदात्त' नायक होते हुए भी *उत्तररामचरित* में एक मानवीय द्वंद्व से ग्रसित व्यक्ति हैं, जो नीति और प्रेम के बीच संतुलन खोजता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 11, March 2025 Impact Factor: 7.67

- मालती, 'प्रगल्भा' नायिका होते हुए भी आत्मनिर्णय में अग्रणी और परिस्थिति-संशोधन में निपुण है, जो उसे पारंपरिक सीमाओं से परे ले जाता है।

(ख) रस सिद्धांत की दृष्टि से पात्रों की उपयुक्तता

नाट्यशास्त्र के अनुसार, नायक-नायिका का स्वरूप रस की उत्पत्ति के लिए उपयुक्त होना चाहिए। भवभूति की नाट्यरचनाओं में मुख्यतः **श्रृंगार**, **करुण**, और **वीर** रसों की प्रधानता है। नायक-नायिका के स्वरूप और उनके आपसी संबंध इन रसों की निष्पत्ति में सहायक होते हैं।

- *महावीरचरित* में राम का वीरता से युक्त चरित्र वीर रस की प्रमुखता को पुष्ट करता है।
- *मालतीमाधव* में माधव-मालती का प्रेमपूर्ण संवाद श्रृंगार रस की उत्तमता को प्रकट करता है।
- *उत्तररामचरित* में करुण रस की गहराई नायक-नायिका के भीतरी मानसिक संघर्ष से उपजती है।

(ग) संधि और संध्यंगों में पात्रों की भूमिका

दशरूपक और *नाट्यशास्त्र* में संधियों (मुख, प्रमुख, गर, विमर्श, निष्कर्ष) और संध्यंगों (उद्घाटन, परिचय, संघर्ष, संकल्प आदि) की स्थापना पात्रों के माध्यम से होती है। भवभूति के पात्र इस शास्त्रीय संरचना में स्वाभाविक रूप से स्थान पाते हैं।

- *मालतीमाधव* में संघर्ष और परिपाक संधि में माधव की निर्णायक भूमिका और मालती की सक्रियता स्पष्टतः संध्यंगों का अनुपालन करती है।
- *उत्तररामचरित* में राम और सीता की मनोदशा कथा को गरिमा देती है, जो 'विमर्श' और 'निष्कर्ष' की प्रक्रिया में शास्त्रीय अनुरूपता को प्रकट करती है।

7. भवभूति की शैलीगत विशेषताएँ एवं रस निष्पत्ति में पात्रों की भूमिका

भवभूति की शैली भावप्रधान, गूढ़ और गंभीर है। उनकी भाषा में ओज और माधुर्य का समुचित संतुलन है। वे पात्रों की अंतरात्मा को उद्घाटित करने में समर्थ हैं, जिससे उनकी नाट्यकृतियाँ केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि संवेदनाओं का प्रवाह बन जाती हैं।

(क) मनोवैज्ञानिक गहराई और संवाद-शक्ति

भवभूति के पात्र शास्त्रीय साँचों से बनकर भी मनोवैज्ञानिक रूप से गहरे हैं। उनके संवाद केवल कथावस्तु को आगे नहीं बढ़ाते, बल्कि उनके भीतरी संघर्ष, प्रेम, पीड़ा और विवेक को भी उजागर करते हैं।

उदाहरणतः, *उत्तररामचरित* में राम का संवाद —

"प्राणत्यागोऽपि कार्यो न तु लोकविगर्हा।"

— केवल एक नीति-वाक्य नहीं, बल्कि उनके आंतरिक द्वंद्व और आदर्शवादिता की अभिव्यक्ति है।

(ख) पात्रों के माध्यम से रसों की निष्पत्ति

- *श्रृंगार रस* – मालती और माधव के आत्मीय संवादों, प्रतीक्षा, छिपे हुए मिलन और साहसिक प्रेम प्रयासों से।
- *करुण रस* – उत्तररामचरित में राम और सीता के वियोग, आत्मपीड़ा और असहायता से।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 11, March 2025 Impact Factor: 7.67

- *वीर रस* – महावीरचरित में राम के युद्ध, संकल्प, और मर्यादा-पालन से।

भवभूति ने अपने पात्रों को रस-संचार का माध्यम बनाकर नाटक को 'रसात्मक अनुभव' में परिणत किया है।

निष्कर्ष

भवभूति की नाट्यकृतियाँ केवल काव्यात्मक सौंदर्य या पौराणिक आख्यानों का पुनर्पाठ नहीं हैं, बल्कि वे भावनात्मक गहराई, सामाजिक चेतना, और शास्त्रीय अनुशासन का संगम हैं। उन्होंने *नायक* और *नायिका* के चरित्रों को न केवल शास्त्रीय मर्यादाओं में गढ़ा, बल्कि उन्हें ऐसा मानवीय स्पर्श भी प्रदान किया जिससे वे आज भी प्रासंगिक और प्रेरक लगते हैं।

(क) नायक-नायिका भेद की शास्त्रीयता और नवीनता

- भवभूति के **नायक** – राम और माधव – शास्त्रीय वर्गीकरण जैसे *धीरोदात्त*, *धीरप्रशांत* और *धीरललित* के अंतर्गत आते हैं, परंतु वे उसमें सीमित नहीं हैं। विशेषतः *उत्तररामचरित* के राम नायकत्व की करुणा और आत्मबलिदान की नई परिभाषा प्रस्तुत करते हैं।
- भवभूति की **नायिकाएँ** – सीता और मालती – भी शास्त्रीय भेदों जैसे *स्वकीया*, *परकीया*, *विरहिणी*, *प्रगल्भा* आदि में रखी जा सकती हैं, परंतु उनका आत्मनिर्णय, कर्तव्यनिष्ठा और वैचारिक शक्ति उन्हें पारंपरिक सीमाओं से आगे ले जाती है।

(ख) शास्त्रीयता और मानवतावाद का समन्वय

भवभूति का सौंदर्य उनके पात्रों की भावभूमि में है। वे शास्त्रसम्मत हैं, परंतु यंत्रवत नहीं। उन्होंने *रस*, *चरित्र*, *संवेदना* और *धर्म* का ऐसा सम्मिलन किया है जिससे नायक-नायिका केवल प्रतीक न रहकर सजीव अनुभव बन जाते हैं।

उनकी नाट्यरचनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि शास्त्रीय साहित्यिक दृष्टिकोण केवल अनुकरण नहीं, अपितु नवसृजन का माध्यम बन सकता है।

(ग) आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

आज के साहित्यिक विमर्शों में जहाँ स्त्री-पुरुष के संबंध, कर्तव्य और प्रेम का द्वंद्व, तथा आत्मसम्मान की चेतना विषय बनती है, वहाँ भवभूति के पात्र विशेष रूप से प्रासंगिक हो उठते हैं। उनका नायक संवेदनशील है, और नायिका निर्णायक। यह दृष्टिकोण आज की साहित्यिक दृष्टि के भी अनुरूप है।

ग्रंथ-सूची

1. **भरतमुनि** – *नाट्यशास्त्र*, भारतीय विद्या भवन संस्करण
2. **विश्वनाथ** – *साहित्यदर्पण*, चॉकीम्बा ओरियंटल सीरीज़
3. **दंडी** – *काव्यादर्श*, सं. पी.वी. काणे
4. **भवभूति** – *उत्तररामचरित*, *मालतीमाधव*, *महावीरचरित* – (संस्कृत एवं हिंदी अनुवाद)

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 11, March 2025
Impact Factor: 7.67

5. **राजशेखर** – *काव्यमीमांसा*
6. **के.पी. जयंतीलाल** – *A Comparative Study of Bhavabhuti and Kalidasa*
7. **विनायक भट्ट** – *संस्कृत नाट्य साहित्य का इतिहास*, चौखम्बा विद्याभवन
8. **गणपतिशास्त्री** – *दशरूपक*, टीका सहित
9. **डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी** – *संस्कृत नाटक: परंपरा और प्रवृत्ति*
10. **डॉ. सत्यव्रत शास्त्री** – *संस्कृत नाट्यशास्त्र का विकास*